जनपद का ऐतिहासिक स्वरूप

इस जनपद का वर्तमान क्षेत्र आर्य सभ्यता के प्रमुख प्राचीन केन्द्र कौशल राज्य का भाग था जो उत्तर में हिमालय दक्षिण में स्यान्दिका नदी, पश्चिम में पांचाल देश और पूर्व में मगध (बिहार) से घिरा था। इस क्षेत्र से जुड़ी हुई अनेक किंवदंतियों के अतिरिक्त पुरातात्विक अवशेष, मूर्तियाँ, सिक्के और अधिकाधिक ईंटे तथा मंदिरों, स्तूपों और बौद्धमठों के अवशेष जिले में कई स्थलों पर पाए गए, जिसका आशय है कि इस जनपद में बहुत पहले से ही एक व्यवस्थित सामाजिक जीवन रहा है। देवरिया मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 16 किमी० की दूरी पर स्थित खुखून्दू में ब्राह्मण धर्म के अनेक अवशेष होने के साथ ही एक प्रमुख जैन तीर्थंकर उषोदन्त का जन्म भी होना प्रमाणित है।

जनपद के परम्परागत इतिहास के सूत्र पौराणिक युग से निःसृत हैं। कौशल नरेश भगवान राम ने अपने ज्येष्ठ पुत्र कुश को कुशावती का राजा नियुक्त किया था जो वर्तमान समय में देवरिया जनपद से अलग हुआ कुशीनगर है। कुशावती, कुशीनारा, कुशीग्राम, कुशीनगर आदि प्राचीन कुशावती के ही विभिन्न नाम प्रतीत होते हैं। कुश के बाद यहाँ का शासन लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने सम्हाला जिसे रामायण में मल्ल (बहादुर) का विरूद प्रदान किया गया है। पूर्व महाभारतकाल में इस जनपद का सम्बन्ध चक्रवर्ती सम्राट महासुदत्सव से जोड़ा गया है। कल्चुरि शासन काल (1100 ई०) में विशेन सिंह ने नवापार (सलेमपुर) के पास एक लघुराज्य की रचना कर ली थी। 1114 ई० से 1154 ई० तक इस जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्र पर गहड़वाल शासक गोविंदचन्द्र का नियंत्रण था। 1194 ई० में गहड़वाल शासन के पराभव के बाद विशेन क्षत्रिय ने सलेमपुर मझौली में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी, किन्तु उस समय इस जनपद का शेष भाग भारों द्वारा नियंत्रित था।

ऐतिहासिक संदर्भ में इस जनपद के रूद्रपुर और बरहज का अलग महत्व है। रूद्रपुर बाबा दुग्धेश्वरनाथ मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। सन् 1605 ई० में नेत्रवंशीय राजा रूद्रसेन ने इस स्थान पर पुराने किले की जगह नया किला बनवाया। इन्हीं के नाम पर इस स्थल का नाम रूद्रपुर पड़ा। बरवपार बरहज जो कभी नदी मार्ग से यातायात के समय एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र रहा है, अपनी धार्मिक महत्ता के कारण आज भी चर्चित है। मोक्षदायिनी सरयू तट पर बसे (बरहज) के चार अक्षर क्रमशः बद्रीनाथ, रामेश्वरम्, हरिद्वार और जगन्नाथपुरी का कुछ-कुछ बोध कराते हैं, ऐसी मान्यता है।

भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई० में हुआ, उस समय यह जनपद गोरखपुर जिले की एक तहसील था फिर भी यहाँ के लोगों में अंग्रेजों के प्रति काफी रोष व्याप्त था। घाघरा नदी को पार करने के लिए "पैना" की राष्ट्रभक्त एवं बहादुर जनता ने घाट की नौंचों को डुबो दिया। सलेमपुर में अंग्रेजों की अफीम की कोठी लूट ली गई। रूद्रपुर के राजा ने भी अंग्रेजों के विरूद्ध मोर्चा खोल दिया जिसके प्रतिशोध में उनके यहाँ यूरोपीय सैनिकों ने लूट-पाट की।

21 अगस्त 1921 को लार में बाबा राघवदास एवं स्वामी देवानंद की अध्यक्षता में एक सम्मेलन स्वतंत्रता संग्राम हेतु हुआ। 17 सितम्बर 1921 को स्व० पं० जवाहर लाल नेहरू देवरिया पधारे थे परन्तु शहर में दफा 144 लागू रहने के कारण भाषण नहीं दे पाये और रामपुर कारखाना, कसया होते हुए गोरखपुर चले गये। 13 अप्रैल 1924 को पं० नेहरू दुबारा देवरिया पधारकर आयोजित राजनैतिक सम्मेलन की अध्यक्षता किए।

आधुनिक युग के विकास क्रम में देवरिया जनपद के कई स्थलों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे स्थलों में प्रमुख हैं - पैना, बैकुण्ठपुर, बरहज, लार, बंगरा, गौरी बाजार, सलेमपुर बसन्तपुर धूसी, ऊधोपुर, बनकटा, आदि। गाँधी जी ने 1929 (अक्टूबर) में देवरिया और पडरौना को जनसभाओं को संबोधित किया था। बाबा राघवदास ने नमक आंदोलन के संदर्भ में, अप्रैल 1930 में अभियान चलाया था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का पैत्रिक गाँव भेड़ी-बकरूआ इसी जनपद के रूद्रपुर तहसील में स्थित है।

1931 के आरम्भ में सरकार एवं जमींदारों के विरूद्ध इस क्षेत्र में व्यापक आंदोलन हुए। जमींदारों द्वारा मनमाना कर वसूलने के विरोध में काश्तकार कांग्रेस के स्वयं सेवक बनने लगे एवं जुलूस निकालने लगे। सरकार ने कांग्रेस के सभी दफ्तरों को सील कर दिया। इस क्षेत्र में जमींदारों द्वारा की जा रही ज्यादतियों की जाँच हेतु आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में एक समिति ने व्यापक दौरा किया था तथा जिसने यहाँ के कुछ विशिष्ट जमींदारों का नामोल्लेख किया है। आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से जून 1931 को पुरुषोत्तमदास टण्डन एवं 11 मई 1935 को रफी अहमद किदवई ने देवरिया के विभिन्न अंचलों का दौरा किया था।

भारत छोड़ो आंदोलन के समय भी देवरिया पीछे नहीं रहा। देवरिया तथा इसके अन्य कस्बों, बाजारों तथा विभिन्न गाँवों में डाकखाने लूटने, सड़कतोड़ने, फोन के तार काटने, पुल तोड़ने, मालगोदाम लूटने जैसी घटनाओं द्वारा अंग्रेज प्रशासन को पंगु बनाने का प्रयास किया गया। कसया रोड पर "खजुहा पुल" को सैकड़ों, ग्रामीणों ने मिलकर तोड़ डाला। पडरौना तथा उसके आसपास आंदोलन इतना उग्ररूप धारण कर लिया कि कैप्टन मूर ने इस क्षेत्र में प्रतिशोध की भावना से तबाही मचा दी। सेवरही फार्म गोली काण्ड तथा पथरदेवा विकास खण्ड के बनरही गाँव में अंग्रेजों की गोली से कई लोग शहीद हुए। 14 अगस्त 1942 को बसन्तपुर धूसी की आठवीं कक्षा का छात्र रामचंद्र विद्यार्थी देवरिया शहर स्थित रामलीला मैदान में तिरंगा फहराते समय गोली खाकर शहीद हो गया जहाँ आज शहीद स्तम्भ बना है। भारत छोड़ो आंदोलन के संदर्भ में यहाँ के 580 लोगों को विभिन्न अवधि की जेल की सजा दी गई। 1946 में देवरिया गोरखपुर जनपद से पृथक होकर अस्तित्व में आ गया और 15 अगस्त 1947 से राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ विकास की धारा में अपनी एक छोटी किंतु अहं भूमिका निभाने लगा।